Sanskritasahitya Ki Eka Jhanki

संस्कृतसाहित्य की एक झाँकी

Document Information

Text title : Sanskritasahitya Ki Eka Jha.nki

File name : sanskRRitasAhityakIekajhAnkI.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org

संस्कृतसाहित्य की एक झाँकी

आओ भाई संस्कृत का कुछ परिचय तुम्हें करावें,
इसके साहित्यिक वैभव की झाँकी एक दिखावें ।
इसके पावन पद-पद्मों पर, आओ शीश झुकाओ,
आज प्रतिज्ञा लेकर इसकी रक्षा का, घर जाओ । १
यह दुनिया की भाषाओं में सबसे पहली भाषा,
सबसे शिष्ट परिष्कृत कोमल यह इसकी परिभाषा ।
भारत के सब ज्ञान-कला का अक्षय यही खजाना,
इसका काम सभी लोगों को सुन्दर सुखी बनाना । २
ये हैं चारो वेद जगत के आदिम ग्रन्थ महान,
जिनसे मिला विश्व को पहले ज्ञान ज्योति का दान ।
ब्राह्मण ग्रन्थ तथा आरण्यक वेदों के परिशिष्ट,
और चार उपवेद अङ्ग छ वैदिक अङ्ग विशिष्ट । ३
इधर वेद-साहित्य शिरोमणि ये उपनिषद महान,
सत्य-ज्ञान-आनन्द-शान्तिमय जीवन के सोपान ।
गौतम-कपिल-कणाद-पतञ्जलि-जैमिनि व्यास-विनिर्मित,
ये छ दर्शन-शास्त्र हमारे ज्ञानसमुद्र असीमित । ४
यहाँ आदि कवि वाल्मीकि की अमर काव्यमय धारा,
जिसका दिव्य सुधा रस पीकर जीवित देश हमारा ।
व्यास-महामुनि की प्रतिभा का इधर दिव्य वरदान,
पञ्चम वेद महाभारत है भारत का अभिमान । ५
ये हैं पूज्य पुराण अठारह उपपुराण समवेत,
धर्म-नीति-इतिहास-सुभाषित-नानाविषय-समेत ।
याज्ञवल्क्य-मनु-आदि रचित ये धर्मग्रन्थ अनेक,
सदाचार-वर्णाश्रम-विधि का जिनमें विशद विवेक । ६
गणित-फलित-सिद्धान्त-सहित यह ज्योतिष शास्त्र अपार,

यह अष्टाङ्ग चिकित्सा-तरु का शाखा-शत-विस्तार ।
शिल्प-कला-सङ्गीत-नाट्य के यहाँ ग्रन्थ ये आकर,
कामशास्त्र के ग्रन्थ इधर ये स्नेह-सौख्य-रत्नाकर । ७
यहाँ काव्य-नाटक चम्पू का भव्य विपुल विस्तार,
विविध छन्द सज्जा शैली का यह अनुपम सम्भार ।
सरस मधुर कोमल कविता का यह सुन्दर उद्यान,
जहाँ दूर से मुग्ध मधुप आ करते हैं मधुपान । ८
इधर चित्र-काव्यों की देखें चारु चमत्कृति-शाली-
अखिल विश्व में अपनी जैसी रचना एक निराली ।
एकाक्षर द्व्यक्षर बह्वर्थक विपर्यस्त कवितायें,
इस उपवन की रंग-बिरंगी सभी कुसुम-कलिकायें । ९
नीति-सुभाषित ग्रन्थों की यह अनुपम मणिमय माला,
एक-एक दाने से होता जिनके परम उजाला ।
यहाँ देखिये लोक कथाओं का साहित्य अपार,
गद्य-पद्यमय परम मनोहर सत्-शिक्षा आगार । १०
यहाँ देखिये स्तुतिग्रन्थों का एक अलग संसार,
जहाँ भक्ति-करुणा-वत्सलता की बहती रसधार ।
यहाँ ललित-गीतों का, देखें, मोहक स्वर-सञ्चार,
एक एक पद में वाणी का नव नूपुर-झङ्कार । ११
वैदिक गृह्य कर्मकाण्डों का यह संघात महान,
पूजा यज्ञ तीर्थ व्रत संस्कारों का विविध विधान ।
यह काश्मीरिक शैव तन्त्र-ग्रन्थों का एक निकाय,
मन्त्र-साधना के ग्रन्थों का यह अद्भुत समुदाय । १२
यह, देखो, हैं कालिदास की अद्भुत कृतियाँ सारी,
एक एक कविता है इनकी निधि अनमोल हमारी ।
यहाँ देखिये पाणिनि मुनि की अद्भुत अष्टाध्यायी,
जिसने जग में भारत-भू की अमर कीर्ति फैलायी । १३
गुरु वशिष्ठ का विस्मयकारी यह कर्तृत्व महान,
ग्रन्थ योगवाशिष्ठ देखिये ज्ञान-समुद्र-समान ।
यहाँ आर्य चाणक्य महामति की प्रतिभा का वैभव,
ग्रन्थ देखिये अर्थशास्त्र यह भारत-भू का गौरव । १४
यह वाराह मिहिर की देखें, बृहत्संहिता कैसी,

रचना नाना-विषय-समन्वित अद्भुत सागर जैसी ।
व्यासदास क्षेमेन्द्र महाकवि का यह ग्रन्थ-वितान,
सकल लोक-चातुर्य-कला का अनुपम एक निधान । १५
बौद्ध-जैन-संस्कृत-ग्रन्थों का यह अद्भुत भण्डार,
इधर देखिये, शत-शत अनुपम रत्नों का आगार ।
वैदिक-बौद्ध-जैन-कृतियों का संस्कृत पावन सङ्गम,
जिसकी धारा से भारत का प्लावित स्थावर-जङ्गम । १६
भाषा या साहित्य नहीं यह वाणी का शृङ्गार,
यह स्वर्गीय सुधा का शीतल सुरभित रसमय धार ।
भारत की साहित्य-साधना-संस्कृति का यह प्राण,
इसकी रक्षा में ही निश्चित भारत का कल्याण ।
इसका शुभ दर्शन कर अपना जीवन धन्य बनाओ,
आज प्रतिज्ञा लेकर इसकी रक्षा का, घर जाओ । १७

– रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Sanskritasahitya Ki Eka Jhanki
pdf was typeset on May 19, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*